Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/242
Peer Reviewed & Refereed Journal, NOV-DEC 2024, Vol- 13/86

केन्द्रीय एवं मान्य विश्वविद्यालयों के एम.एड. पाठ्यक्रम में निहित शिक्षा दर्शन प्रश्नपत्र के उद्देश्य : एक विश्लेषण

श्रुति अग्रवाल

शोधछात्रा, शिक्षा विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान–304022

Email-agrawalshruti232@gmail.com

डॉ0 महेश कुमार गंगल

एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

Email- drmkgangal@gmail.com

Paper Received On: 20 NOV 2024

Peer Reviewed On: 24 DEC 2024

Published On: 01 JAN 2025

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से केन्द्रीय एवं मान्य विश्वविद्यालयों में संचालित द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा के एम.एड. पाठ्यक्रम में सम्मिलित शिक्षा दर्शन अनिवार्य प्रश्न पत्र की पाठ्यवस्तु अधिगम के निर्धारित उद्देश्यों का विश्लेषण किया गया है। शोध अध्ययन हेतु प्रलेखी सर्वेक्षण विधि एवं विषयवस्तु विश्लेषण प्रविधि का चयन किया है। उत्तर प्रदेश के केन्द्रीय एवं मान्य विश्वविद्यालयों में अध्यापक शिक्षा के द्विवर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम के शिक्षा दर्शन अनिवार्य प्रश्न पत्र हेतु पाठ्यवस्तु अधिगम के निर्धारित समस्त उद्देश्य शोध की जनसंख्या हैं। शोध हेतु उत्तर प्रदेश के एक मान्य (अर्थात समग्र) और दो केन्द्रीय विश्वविद्यालयों, जिसमें एम.एड. का द्विवर्षीय पाठ्यक्रम संचालित है, का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से किया गया है। शोध उपकरण के रुप में स्वनिर्मित विषयवस्तु विश्लेषण प्रारूप द्वारा अध्ययन हेतु आवश्यक प्रदत्तों का संग्रह किया गया है। केन्द्रीय एवं मान्य विश्वविद्यालयों के एम.एड. पाठ्यक्रम के शिक्षा दर्शन प्रश्नपत्र हेतु निर्धारित उद्देश्यों सम्बन्धी प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं अर्थापन ब्लूम टैक्सोनॉमी के आधार पर किया गया है। शोध अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया है कि उत्तर प्रदेश के केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में संचालित द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा के एम.एड. पाठ्यक्रम में निहित शिक्षा दर्शन अनिवार्य प्रश्न पत्र की पाठ्यवस्तु अधिगम के निर्धारित उद्देश्यों में 'जानना' तथा 'समझना' को ही स्थान दिया गया है। वहीं मान्य विश्वविद्यालय के एम.एड. पाठ्यक्रम में निहित शिक्षा दर्शन अनिवार्य प्रश्न पत्र की पाठ्यवस्तु अधिगम के निर्धारित उद्देश्यों में 'जानना', 'समझना' तथा 'विश्लेषण' को स्थान दिया गया है जबकि केन्द्रीय एवं मान्य विश्वविद्यालयों के द्विवर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम के शिक्षा दर्शन प्रश्न पत्र हेतु निर्धारित संज्ञानात्मक पक्ष के उच्च स्तर के उद्देश्यों को स्थान नहीं दिया गया है। शोधकर्ताओं का सुझाव है कि केन्द्रीय एवं मान्य विश्वविद्यालयों के एम.एड. पाठ्यक्रम के शिक्षा दर्शन प्रश्न पत्र हेतु निर्धारित उद्देश्यों में संशोधन करके ऐसी पाठ्यवस्तु समाहित की जाये जिससे कि केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में अनुप्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण व मूल्यांकन एवं मान्य विश्वविद्यालय में अनुप्रयोग, संश्लेषण व मूल्यांकन जैसे संज्ञानात्मक पक्ष के उच्च स्तर के उद्देश्यों को भी स्थान मिल सके।

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रस्तावना : शिक्षा की प्रक्रिया के संचालन में शिक्षक की प्रमुख भूमिका है। शिक्षक पर ही व्यक्ति निर्माण के साथ–साथ राष्ट्र–निर्माण का उत्तरदायित्व होता है। यह दायित्व व्यवसायिक योग्यताधारी शिक्षक ही कुशलता से निभा सकते हैं। शिक्षकों में शिक्षण–कौशल का विकास करने में प्रशिक्षण का अहम् योगदान है। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम को स्तरीय व उच्च बनाने के प्रयास निरन्तर किये गये। इस सम्बन्ध में गठित आयोगों, राष्ट्रीय शिक्षा नीति आदि के द्वारा शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम की गुणात्मकता में वृद्धि हेतु सुझाव दिये गये। अध्यापक शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुये **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** में विशेष योजना दी गई है– "अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता के उच्चतर मानक निर्धारित किये जायेंगे, निम्न स्तरीय अध्यापक शिक्षा संस्थानों के प्रति कठोर कार्यवाही होगी, सभी बड़े बहु–विषयक विश्वविद्यालयों, सार्वजनिक विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों का लक्ष्य होगा कि अपने यहाँ ऐसे उत्कृष्ट शिक्षा–विभागों की स्थापना करें जो शिक्षा के अत्याधुनिक अनुसंधानों को क्रियान्वित कर सकें साथ ही अन्य विशिष्ट विषयों से सम्बन्धित विभागों के सहयोग से शिक्षकों को शिक्षित करने में नये–नये कार्यक्रमों को संचालित करें। वर्ष 2030 तक बहु विषयक उच्चतर शिक्षण–संस्थानों द्वारा प्रदान किया जाने वाला चार वर्षीय एकीकृत बी0एड0 कार्यक्रम विद्यालय के अध्यापकों के लिये न्यूनतम डिग्री योग्यता बन जायेगा। "

भारत में शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु विभिन्न प्रकार के अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम चल रहे हैं – एन.टी.टी., बी.टी.सी, डी.एलएड., बी.एड., एम.एड.आदि। इन सभी पाठ्यक्रमों का उद्देश्य शिक्षकों को शिक्षण–प्रक्रिया के लिए गुणात्मक प्रशिक्षण देना है। उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए भारत में विभिन्न प्रकार के विश्वविद्यालय संचालित हैं – केन्द्रीय, राज्य, मान्य, निजी विश्वविद्यालय आदि। इन विश्वविद्यालयों में संचालित शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर अनेक शोध किए गये –

पंतकार, डॉ0 पी0एस0 (2013) ने 'एम.एड. करीक्यूलम एण्ड क्वालिटी इन्डीकेटर इन टीचर एजुकेशनः स्टूडेन्ट फीडबैक' पर अध्ययन कर पाया कि अधिकतर एम.एड. के विद्यार्थी वर्तमान में चल रहे एम.एड. पाठ्यक्रम से संतुष्ट हैं साथ ही प्रचलित शिक्षण पद्धति भी महत्वपूर्ण दृष्टिगत हुई। **राज, अंजलि (2014)** ने 'राज्य, मान्य एवं निजी विश्वविद्यालयों के अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम का विश्लेषणात्मक अध्ययन' कर पाया कि राज्य, मान्य एवं निजी विश्वविद्यालयों के अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम का गठन पूर्ण रूप से राष्ट्रीय शिक्षा पाठ्यचर्या 2009 के अनुसार नहीं किया गया। **आचार्य पूनम (2017)** ने 'एम.एड. पाठ्यक्रम के प्रति एम.एड. के विद्यार्थियों एवं अध्यापकों की अभिवृति का अध्ययन' कर पाया कि राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा संचालित एम.एड. पाठ्यक्रम के अनिवार्य प्रश्नपत्रों के प्रति विद्यार्थियों व अध्यापकों की अभिवृति में सार्थक अन्तर नहीं है।

शर्मा, साहू (2018) ने 'स्टूडेन्ट टीचर्स परसेप्शन टूवडर्स करीक्यूलम रिफार्म इन टीचर एजुकेशन प्रोग्राम इन उड़ीसा पर शोध किया। इन्होंने शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम में पाठ्यक्रम–सुधार के प्रति एम. एड. के विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण का स्तर उच्च एवं धनात्मक पाया। **गुप्ता एवं रकवाल (2020)** ने 'ए

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

स्टडी ऑफ द परसेप्शन ऑफ टीचर ट्रेनीज टूवार्डस द टू ईयर टीचर एजुकेशन प्रोग्राम बींइग रन इन इण्डिया' पर शोध किया जिसका उद्देश्य अवधि, शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रम तथा नवाचारों के प्रति सरकारी एवं प्राइवेट महाविद्यालयों के बी.एड. तथा एम.एड. के विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण का तुलनात्मक अध्ययन करना था। निष्कर्ष स्वरूप अवधि, शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रम एवं नवाचारों के सन्दर्भ में द्विवर्षीय अध्यापक–शिक्षा कार्यक्रम के प्रति छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं के प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जबकि सरकारी एवं प्राइवेट महाविद्यालयों के बी.एड. एवं एम.एड के विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण में सार्थक अन्तर पाया गया।

इस प्रकार स्नातक एवं स्नात्कोत्तर स्तर के शिक्षक–प्रशिक्षण में पाया गया कि विभिन्न प्रकार के विश्वविद्यालयों में अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में पर्याप्त भिन्नता है। उक्त स्थिति से प्रेरित होकर शोधकर्ताओं के मस्तिष्क में उत्तर प्रदेश के केन्द्रीय एवं मान्य विश्वविद्यालयों में संचालित द्विवर्षीय एम. एड. पाठ्यक्रम में उद्देश्यों से सम्बन्धित प्रश्न उत्पन्न हुये– केन्द्रीय एवं मान्य विश्वविद्यालयों के द्विवर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम के शिक्षा–दर्शन प्रश्नपत्र हेतु कौन–कौन से उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं?, केन्द्रीय एवं मान्य विश्वविद्यालयों के द्विवर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम में शिक्षा दर्शन प्रश्नपत्र में निहित जानना, समझना, अनुप्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण एवं मूल्यांकन उद्देश्यों में से किनको वरीयता दी गयी है ?इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिये शोधकर्ताओं ने केन्द्रीय एवं मान्य विश्वविद्यालयों के द्विवर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम के शिक्षा–दर्शन प्रश्नपत्र के उद्देश्यों के विश्लेषण के कार्य को शोध का केन्द्र बिन्दु बनाया है।

1.2 समस्या कथन : शोधकर्ताओं द्वारा शोध अध्ययन हेतु समस्या को निम्नरूप से रखा गया– **केन्द्रीय एवं मान्य विश्वविद्यालयों के एम.एड. पाठ्यक्रम में निहित शिक्षा दर्शन प्रश्नपत्र के उद्देश्य : एक विश्लेषण।**

1.3 अध्ययन के उद्देश्य : प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नांकित रूप में निर्धारित किये गये है–

1.3.1 प्रमुख उद्देश्य : केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के एम.एड. पाठ्यक्रम के शिक्षा–दर्शन प्रश्नपत्र के उद्देश्यों का विश्लेषण करना।

सहायक उद्देश्य : केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के एम.एड. पाठ्यक्रम में शिक्षा दर्शन प्रश्नपत्र में निहित जानना, समझना, अनुप्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण एवं मूल्यांकन उद्देश्यों का विश्लेषण करना।

1.3.2 प्रमुख उद्देश्य : मान्य विश्वविद्यालय के एम.एड. पाठ्यक्रम में शिक्षा दर्शन प्रश्नपत्र के उद्देश्यों का विश्लेषण करना।

सहायक उद्देश्य : मान्य विश्वविद्यालय के एम.एड. पाठ्यक्रम में शिक्षा दर्शन प्रश्नपत्र में निहित जानना, समझना, अनुप्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण एवं मूल्यांकन उद्देश्यों का विश्लेषण करना।

1.4 शोध विधि : प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश के केन्द्रीय एवं मान्य विश्वविद्यालयों में अध्यापक शिक्षा के द्विवर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम के प्रश्नपत्र शिक्षा दर्शन के उद्देश्यों का विश्लेषण किया गया।

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अतः शोध के लिये सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत प्रलेखी सर्वेक्षण विधि एवं विषयवस्तु विश्लेषण प्रविधि का चयन किया गया है।

1.5 शोध जनसंख्या : प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश के समस्त केन्द्रीय एवं मान्य विश्वविद्यालयों में अध्यापक शिक्षा के द्विवर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम के शिक्षा दर्शन प्रश्नपत्र हेतु निर्धारित उद्देश्य शोध की जनसंख्या हैं।

1.6 न्यादर्शन एवं न्यादर्श : प्रस्तुत शोध हेतु उत्तर प्रदेश के एक मान्य (अर्थात समग्र) और दो केन्द्रीय विश्वविद्यालयों, जिसमें एम.एड. का द्विवर्षीय पाठ्यक्रम संचालित है, का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि (Stratified Random Sampling Method) से किया गया।

1.7 शोध उपकरण : शोध उपकरण के रूप में शिक्षा दर्शन प्रश्नपत्र की पाठ्यवस्तु अधिगम के निर्धारित उद्देश्यों का विश्लेषण करने हेतु स्वनिर्मित विषयवस्तु विश्लेषण प्रारूप का उपयोग किया गया है।

1.8 सांख्यिकी प्रविधियाँ : प्रस्तुत शोध में एम.एड. पाठ्यक्रम के शिक्षा दर्शन प्रश्नपत्र के उद्देश्यों सम्बन्धी प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं अर्थापन करने हेतु सांख्यिकीय प्रविधियों के रूप में सामान्य सांख्यिकी (प्रतिशत एवं ग्राफीय चित्रण) का उपयोग किया है।

1.9 प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं अर्थापनः प्रस्तुत शोध में द्विवर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम के प्रश्नपत्र शिक्षा दर्शन के उद्देश्यों का विश्लेषण ब्लूम टैक्सोनॉमी के आधार पर किया गया है। शिक्षा दर्शन प्रश्नपत्र हेतु निर्धारित उद्देश्यों का विवरण निम्नांकित रूप से किया गया है–

तालिका –1

केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के शिक्षा दर्शन प्रश्नपत्र के उद्देश्य

क्रम संख्या	कोड	श्रेणी	उप कोड	उपश्रेणियाँ	विश्वविद्यालयों के नाम	विषयवस्तु उपलब्धता का प्रतिशत
1	A	जानना	A1	शिक्षा एवं दर्शन में सम्बन्ध	AMUA	50
			A2	भारतीय दर्शन	UOA, AMUA	100
			A3	पाश्चात्य दर्शन	UOA, AMUA	100
			A4	शिक्षा के दर्शन का अर्थ	UOA	50
			A5	शिक्षा का दार्शनिक परिप्रेक्ष्य	UOA	50
			A6	शिक्षा के दर्शन की प्रकृति	UOA	50
2	B	समझना	B1	शिक्षा के दर्शन के कार्य	AMUA	50
			B2	भारतीय संविधान में निहित राष्ट्रीय मूल्य एवं शैक्षिक निहितार्थ	AMUA	50
			B3	शिक्षा का अधिकार	AMUA	50
			B4	शैक्षिक विकास हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986	AMUA	50
			B5	संशोधित नीति 1992	AMUA	50
			B6	शैक्षिक दर्शन के मूल्य एवं सार्थकता	UOA	50
			B7	शिक्षा के दर्शन की विधि एवं क्षेत्र	UOA	50

AMUA – अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी, अलीगढ़ UOA- युनिवर्सिटी ऑफ इलाहाबाद, प्रयागराज

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

रेखाचित्र–1

केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के शिक्षा दर्शन प्रश्नपत्र का उद्देश्य (जानना)

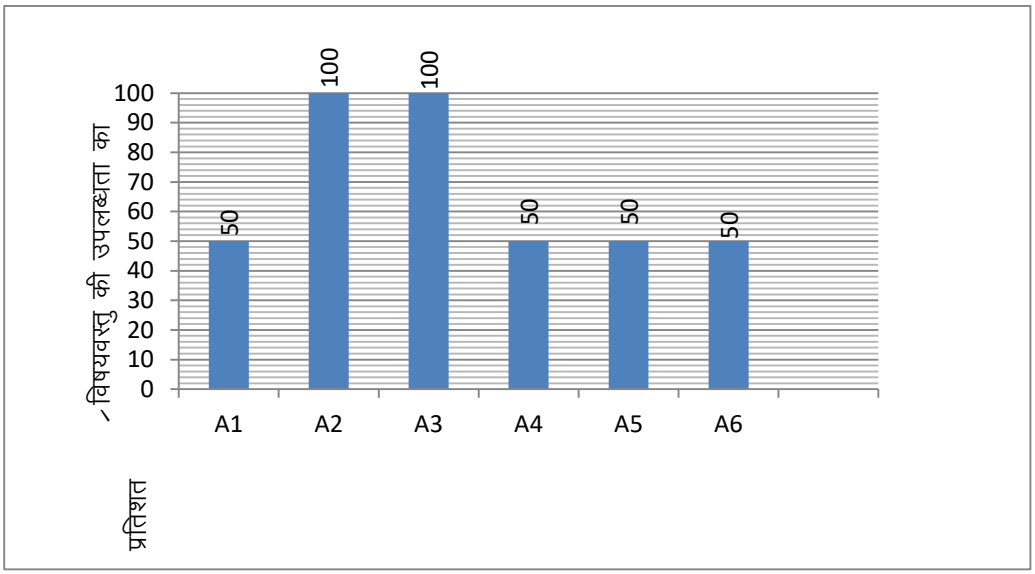

रेखाचित्र–1 में अध्यापक शिक्षा के द्विवर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम के प्रश्नपत्र शिक्षादर्शन हेतु निर्धारित उद्दे य कोड–**A** के सन्दर्भ में 50 प्रति ात केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में **A1, A4, A5, A6** का उल्लेख पाया गया है और शत–प्रति ात केन्द्रीय वि वविद्यालयों में **A2, A3** का उल्लेख किया गया है अतः कहा जा सकता है कि सभी केन्द्रीय वि वविद्यालयों में **A2** (भारतीय दर्शन), **A3** (पाश्चात्य दर्शन) में 'जानने' को महत्व दिया गया है जबकि दो केन्द्रीय वि वविद्यालयों में से केवल एक केन्द्रीय वि वविद्यालय में **A1** (शिक्षा एवं दर्शन में सम्बन्ध), **A4** (शिक्षा के दर्शन का अर्थ), **A5** (शिक्षा का दार्शनिक परिप्रेक्ष्य) एवं **A6** (शिक्षा के दर्शन की प्रकृति) में जानने को महत्व दिया गया है।

रेखाचित्र–2

केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के शिक्षा दर्शन प्रश्नपत्र का उद्देश्य (समझना)

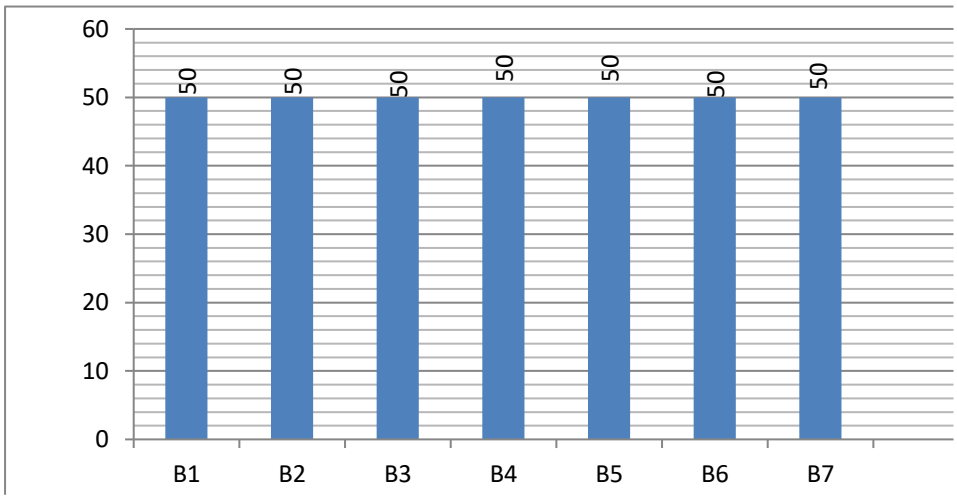

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

रेखाचित्र–2 में अध्यापक शिक्षा के द्विवर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम के प्रश्नपत्र शिक्षादर्शन हेतु निर्धारित उद्दे य कोड–**B** के सन्दर्भ में 50 प्रतिशत केन्द्रीय वि वविद्यालयों में **B1, B2, B3, B4, B5, B6, B7** का उल्लेख पाया गया है। अतः कहा जा सकता है कि दो केन्द्रीय वि वविद्यालयों में से केवल एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय में **B1** (शिक्षा दर्शन के कार्य), **B2** (भारतीय संविधान में निहित राष्ट्रीय मूल्य एवं शैक्षिक निहितार्थ), **B3** (शिक्षा का अधिकार),**B4** (शैक्षिक विकास हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986), **B5** (संशोधित नीति), **B6** (शैक्षिक दर्शन के मूल्य एवं सार्थकता), **B7** (शिक्षा के दर्शन की विधि एवं क्षेत्र) के प्रति समझ विकसित करने को महत्व दिया गया है।

तालिका–2

मान्य विश्वविद्यालय के शिक्षा दर्शन प्रश्नपत्र के उद्देश्य

क्रम सं0	कोड	श्रेणी	उप कोड	उपश्रेणियाँ	विश्वविद्यालय के नाम	विषयवस्तु उपलब्धता का प्रतिशत
1.	A	जानना	A1	शिक्षा एवं दर्शन में सम्बन्ध	NGBUP	100
			A2	भारतीय दर्शन	NGBUP	100
			A3	पाश्चात्य दर्शन	NGBUP	100
			A4	शिक्षा के दर्शन का अर्थ	NGBUP	100
			A6	शिक्षा के दर्शन की प्रकृति	NGBUP	100
			A8	दर्शन का आधुनिक सम्प्रत्यय	NGBUP	100
2.	B	समझना	B8	दर्शन की शाखायें	NGBUP	100
			B9	भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन के शैक्षिक निहितार्थ	NGBUP	100
			B10	दर्शन का उपयोग	NGBUP	100
			B11	उत्कृष्टता हेतु शिक्षा	NGBUP	100
			B12	शिक्षादर्शन की आवश्यकता	NGBUP	100
3.	C	विश्लेषण करना	D1	भारतीय दार्शनिकों का शिक्षा में योगदान	NGBUP	100
			D2	पाश्चात्य दार्शनिकों का शिक्षा में योगदान	NGBUP	100
	NGBUP -नेहरू ग्राम भारती युनिवर्सिटी, प्रयागराज					

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

रेखाचित्र–3

मान्य विश्वविद्यालय के शिक्षा दर्शन प्रश्नपत्र का उद्देश्य (जानना)

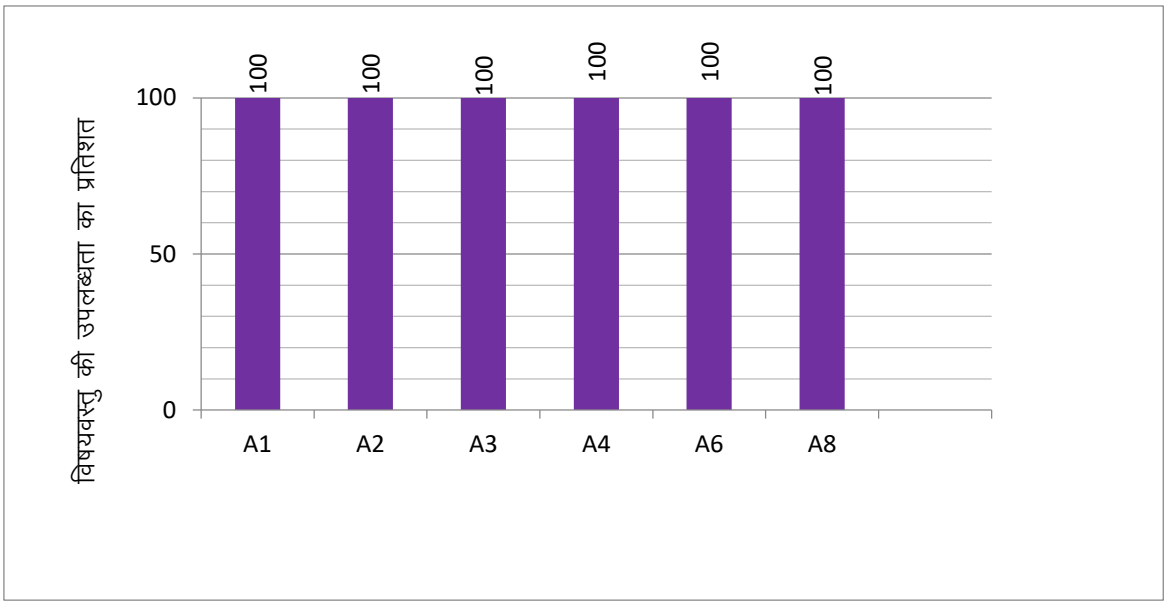

रेखाचित्र–3 में अध्यापक शिक्षा के द्विवर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम के प्रश्नपत्र शिक्षा दर्शन हेतु निर्धारित विशयवस्तु कोड–**A** के सन्दर्भ में 100 प्रति ात मान्य वि वविद्यालय में **A1, A2, A3, A4, A6, A8** का उल्लेख पाया गया है अतः कहा जा सकता है कि केवल एक मान्य विश्वविद्यालय में **A1** (शिक्षा व दर्शन में सम्बन्ध), **A2** (भारतीय दर्शन), **A3** (पाश्चात्य दर्शन), **A4** (शिक्षा दर्शन का अर्थ), **A6** (शिक्षा दर्शन की प्रकृति) **A8** (दर्शन का आधुनिक सम्प्रत्यय) में जानने को महत्व दिया गया है।

रेखाचित्र–4

मान्य विश्वविद्यालय के शिक्षा दर्शन प्रश्नपत्र का उद्देश्य (समझना)

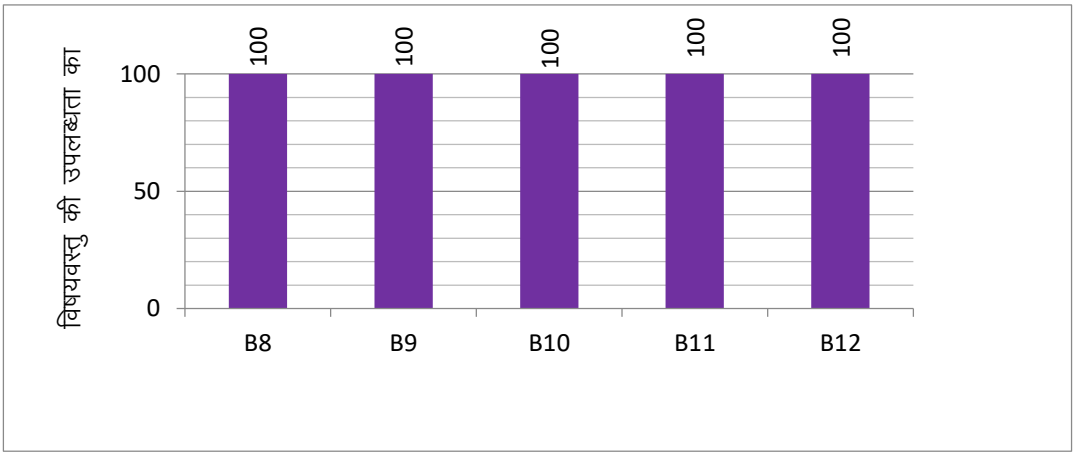

रेखाचित्र–4 में अध्यापक शिक्षा के द्विवर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम के प्रश्नपत्र शिक्षा दर्शन हेतु निर्धारित विशयवस्तु कोड–**B** के सन्दर्भ में 100 प्रति ात मान्य वि वविद्यालय में **B8, B9, B10,**

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

B11, B12 का उल्लेख पाया गया है अतः कहा जा सकता है कि मान्य वि ववविद्यालय में **B8** (दर्शन की शाखायें), **B9** (भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन के शैक्षिक निहितार्थ), **B10** (दर्शन का उपयोग), **B11** (उत्कृष्टता हेतु शिक्षा), **B12** (शिक्षा के दर्शन की आवश्यकता) में समझने को महत्व दिया गया है।

रेखाचित्र–5

मान्य विश्वविद्यालय के शिक्षा दर्शन प्रश्नपत्र का उद्देश्य (विश्लेषण)

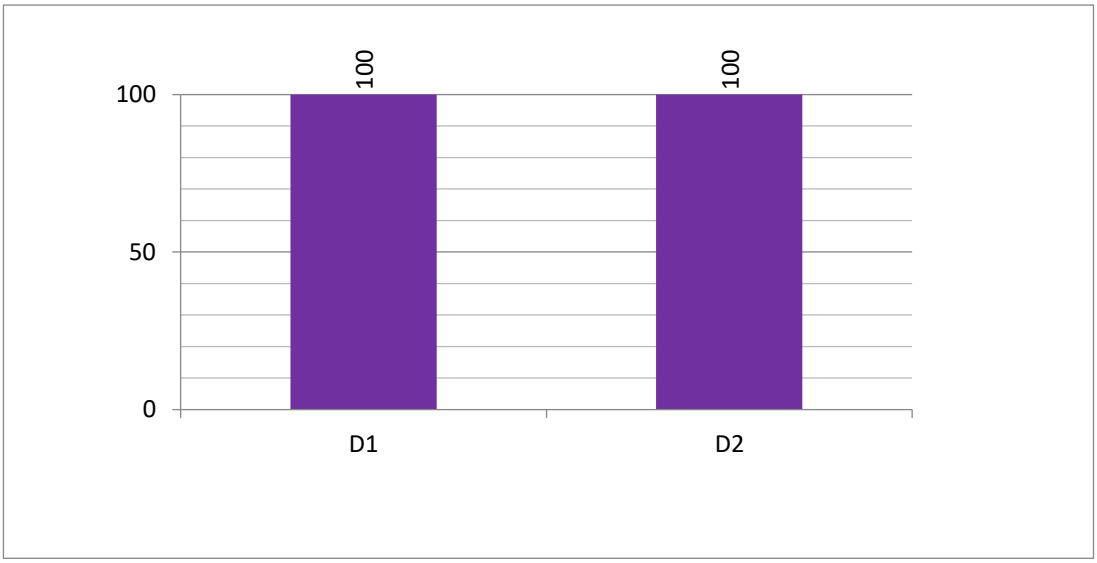

रेखाचित्र–5 में अध्यापक शिक्षा के द्विवर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम के प्रश्नपत्र शिक्षा दर्शन हेतु निर्धारित विशयवस्तु कोड–**D** के सन्दर्भ में मान्य वि ववविद्यालय में **D1, D2** का उल्लेख पाया गया है अतः कहा जा सकता है कि मान्य वि ववविद्यालय में **D1** (भारतीय दार्शनिकों का शिक्षा में योगदान), **D2** (पाश्चात्य दार्शनिकों का शिक्षा में योगदान) में विश्लेषण करने को महत्व दिया गया है।

1.10 निष्कर्ष, चर्चा एवं सुझाव : शोध अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया है कि उत्तर प्रदेश में केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में संचालित द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा के एम.एड. पाठ्यक्रम में निहित शिक्षा दर्शन प्रश्न पत्र की पाठ्यवस्तु अधिगम के निर्धारित उद्देश्यों में 'जानना' तथा 'समझना' को ही स्थान दिया गया है। वहीं मान्य विश्वविद्यालय के एम.एड. पाठ्यक्रम में निहित शिक्षा दर्शन प्रश्न पत्र की पाठ्यवस्तु अधिगम के निर्धारित उद्देश्यों में 'जानना', 'समझना' तथा 'विश्लेषण' को स्थान दिया गया है। जबकि केन्द्रीय एवं मान्य विश्वविद्यालयों के द्विवर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम के शिक्षा दर्शन प्रश्न पत्र हेतु निर्धारित उद्देश्यों में संज्ञानात्मक पक्ष के उच्च स्तर के उद्देश्यों को स्थान नहीं दिया गया है। शोधकर्ताओं का सुझाव है कि केन्द्रीय एवं मान्य विश्वविद्यालयों के एम.एड. पाठ्यक्रम के शिक्षा दर्शन प्रश्न पत्र हेतु निर्धारित उद्देश्यों में संशोधन करके ऐसी पाठ्यवस्तु समाहित की जाये जिससे केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में अनुप्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण व मूल्यांकन एवं मान्य विश्वविद्यालय में अनुप्रयोग, संश्लेषण व मूल्यांकन जैसे संज्ञानात्मक पक्ष के उच्च स्तर के उद्देश्यों को भी स्थान मिल सके और विश्वविद्यालयों

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

में संचालित द्विवर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम पूर्ण करने वाले अध्यापक शिक्षा के विद्यार्थियों में शिक्षा दर्शन प्रश्न पत्र की पाठ्यवस्तु अधिगम उद्देश्यों के माध्यम से भी संज्ञानात्मक पक्ष से सम्बन्धित उच्च स्तर की योग्यताओं के विकास को सुनिश्चित किया जा सके।

सन्दर्भ

शर्मा एन.के. 2009, अध्यापक शिक्षा, के.एस.के पब्लिकेशन, नई दिल्ली ,पृष्ठ संख्या –12

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार पृ0सं0 –68

गुप्ता ,एस.पी. व गुप्ता अल्का 2010, भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,पृ0सं0–26

https://sodhganga.inflibnet.al.in/handle/10603/14180

https://hdl.handle.net/10603/19303

https://www.researchgate.net/publication/258027602

https://ndpublisher.in/admin/issues/EQv9nla,pdf

https://www.researchgate.net/publication/341400211

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies